सशक्त महिलाओं का भारत

समर्थ नारी गौरव

सोनाली तिवारी 'दीपशिखा'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

सशक्त महिलाओं का भारत

सोनाली तिवारी 'दीपशिखा'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-81-951277-3-3

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
मोबाईल- 9424765259, 9009465259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- सोनाली तिवारी 'दीपशिखा' 2021
मूल्य- 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्युटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY SONALI TIWARI 'DEEPSHIKHA'

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

प्रथम भाग

आधुनिक सशक्त नारी

अनादिकाल से ही नारी सशक्त और सक्षम रही है। पर हाँ कुछ संकीर्ण विचारों, रीति-रिवाजों, परम्पराओं की घटिया एवं भद्दी धूमिल परतें इनके सशक्तिकरभण पर भारी पड़ गईं। पर नारी का प्रकृति प्रदत्त स्वभाव ही है संघर्ष करना। आज इसी का परिणाम है कि, समस्त बंधनों, रुकावटों और उत्तरदायित्वों के बाद भी आज नारियों का चहुँमुखी विकास संभव हो सका है। कदाचित इसीलिए नारी को सृष्टि सृजन का वरदान प्राप्त है। और उसने अपनी इस भूमिका का निर्वहन कुशलता से किया है। बिना किसी स्वार्थ के, वह निरन्तर रचती आ रही है नित नये मानव। पर शोक की बात तो यह है कि, वह तो सिर्फ मानव को ही जन्म देती है परन्तु वह मानव कभी-कभी उसी के लिए दानव का रूप धारण कर लेते हैं। और छल से, कभी बल से तो कभी अपना प्रभुत्व स्थापित करने हेतु, नारियों की स्वतंत्रता, आकांक्षा, आत्मनिर्भरता पर प्रतिबंध लगा देते हैं। और समाज की यही प्रवृत्ति उसे पुरुष प्रधान समाज का पद दिलाती है। सारे बन्धन नारियों के लिए परम्परा के नाम पर ठगा जाना सिर्फ नारियों के भाग में ।

समस्त बन्धनों, कुप्रथाओं, नारी को बोना बना देने वाले सामाजिक दाव-पेंचों के बाद भी नारियों ने यह सिद्‌ध कर दिया है कि, वह सच में प्रकृति की एक उत्कृष्ट रचना है।

"मिसालों की भी मिशाल है नारी"

"सच कहूँ तो बेमिशाल है नारी"

द्वितीय भाग

अपना महत्व समझें--प्रत्येक नारी को अपने जीवन का महत्व समझना बहुत जरूरी है। और उसका दायित्व है कि, वह अपनी संतानों प्रमुख रूप से बेटियों को जीवन जीने का महत्व जरूर समझाए। हम जीवन तो जी लेते हैं। पर कहीं वह निरर्थक तो नहीं यह चिन्तन अतिआवश्यक है। जीवन जीने का एक सार्थक उद्देश्य अवश्य होना चाहिए। जन्म के पश्चात शिक्षा, उच्च शिक्षा, विवाह बच्चे और फिर विभिन्न प्रकार के बंधनों में जकड़ कर ही महिलाओं का जीवन स्वाहा हो जाता है। कभी अच्छी बेटी बनने की चाह में, कभी अच्छी बहू, पत्नी और अच्छी माँ बनने की चाह में। अगर इन सब से बाहर निकल कर देखें तो बहुत कुछ है जीवन में अपने लिए भी जीना सीखें। अपनी प्रत्येक लालसा पूर्ण करें। क्योंकि अपने लिए जीने और अपनी समस्त अभिलाषाएँ पूर्ण करने हेतु कोई दूसरा जन्म प्राप्त नहीं होगा इसी जन्म में ही सब कुछ करना है। अपनों के लिए प्रेरणा बने। अपने लिए जीने का अर्थ यह कदापि नहीं है कि, अपने कर्तव्य, दायित्व और कर्मों से भागें बल्कि, सारे कर्तव्यों का पालन करते हुए अपना एक अलग परिचय प्रतिस्थापित करें।

चाहे स्त्री हो या पुरुष ईश्वर की एक उत्कृष्ट रचना होती है। स्वयं को खोजनें का प्रयत्न करें। मैं कुछ नहीं कर सकती! क्योंकि मैं स्त्री हूँ... इस भावना का अतिशीघ्र त्याग कर दें अर्थात, अपने आप को नारी बेचारी समझने की भूल कदापि ना करें। अधिकांशतः देखा गया है कि, कितनी ही प्रतिभाशाली

बेटियों का कम उम्र में ही विवाह कर दिया जाता है, और फिर उनका जीवन घर-गृहस्थी तक ही सीमित रह जाता है जबकि, उन्हीं में से कुछ कल्पना चावला, रितु करिधल, सावित्रीबाई फुले, बछेंद्री पाल, लता मंगेशकर, लक्ष्मी बाई, किरण बेदी, और रजिया सुल्तान होती हैं। इतिहास भरा पड़ा है भारत देश की वीरांगनाओं की वीर गाथाओं से...

विपरीत परिस्थितियों में भी यह वीरांगनाएँ कभी देश के लिए कभी समाज के लिए कभी परिवार एवं कभी अपने हक के लिए लड़ीं। नारी अगर आ जाए रण में बनकर काली तो रणचंडी कहलाती है। सिर्फ दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती ही रूप नहीं हैं नारी के...

सहजता, सरलता और निपुणता से प्रत्येक कार्य को करती हुई, जीवन-पथ की समस्त बाधाओं को पार करने में सक्षम है नारी। अब समय नहीं है रोने-गिड़गिड़ाने का अपितु समय आ गया है अपने अधिकारों के लिए लड़ने का। हमने स्वतंत्रता में जन्म लिया है एवं स्वयं को परतंत्र सिद्ध नहीं होने देंगे। हम अपनी-अपनी प्रतिभाओं के साथ देश का ध्वज समस्त विश्व में फहराएँगे तभी तो हम कर्मठ, सशक्त और सक्षम कहलाएँगे।

महिला सशक्तिकरण के मार्ग की बाधाएँ-

महिला सशक्तिकरण के मार्ग में अनेकों बाधाएँ आती रही हैं। फिर भी हमारे देश की महिलाओं ने बड़ी ही चतुरत और साहस के साथ उनको धराशायी किया है।

परिवर्तन-

महिलाओं के साथ प्राचीन काल से ही सबसे बड़ी समस्या परिवर्तन रही है जो कुछ नियम,विधान, प्रथाएँ, परम्पराएँ बना दी जाती हैं उन्हीं के भीतर जीना होता है जिसने भी इनका विरोध किया उसे समाज द्रोही, कुल नाशिनी का पद प्राप्त होता है जैसा की सर्वविदित है मीरा बाई को भी प्राप्त हुआ था.....। परन्तु परिवर्तन की एक अति विशिष्ट विशेषता यह है कि, कोई कितना भी विरोध कर ले परिवर्तन सभी को स्वीकारना ही पड़ता है क्योंकि यह कालचक्र की माँग है। और उचित भी है। कोई हजारों साल तक एक जैसे नियमों में कैसे बंधा रह सकता है। प्रथाएँ ही परिस्थितियाँ बदलने पर कुप्रथाओं में परिवर्तित हो जाती हैं। और सारी कुप्रथाएँ स्त्रियों के हिस्से में ही आती हैं पुरुष वर्ग का इन कुप्रथाओं से दूर-दूर तक कोई लेना-देना नहीं होता। बेटी को जन्म लेते ही यह अनुभव कराया जाता है कि तुम बेटी हो जैसे बेटी ना हुई कोई श्रापित प्रतिमा हो...। कितनी ही बेटियों को जन्म से पूर्व ही मार दिया जाता है। केवल इसी अपराध के कारण कि वह बेटी हैं। जैसे-तैसे दया करके जन्म दे भी दिया जाता है तो, आरम्भ से ही इनके लालन-पालन, शिक्षा आदि में भेदभाव किया जाने लगता है। बात यहीं तक सीमित नहीं है, बेटियों का सम्पूर्ण जीवन ही संघर्ष से भरा रहता है। अगर जन्म देने वाले माता-पिता भेदभाव ना भी करें तो समाज भेदभाव करता है। विवाह उपरान्त जब उसी घटिया समाज के किसी सफेदपोशी घर में उन्हें ब्याह दिया जाता है तो, कभी दहेज के लोभ में जीवित जला दिया जाता है, तो कभी घरेलू हिंसा के कारण यह

आत्मघात करने पर विवश हो जाती हैं। और शेष रह जाती हैं न्याय माँगती हुई इनकी भटकती हुई निरपराधी आत्माएँ जो कानों में गूँजती हुई न्याय माँगती हैं। परन्तु हमारे समाज के आधुनिक धृतराष्ट्र आँखों पर पट्टी बाँधने के साथ-साथ कान भी बन्द कर लेते हैं।

बाल विवाह, बेमेल विवाह-

उन्नीसवी शताब्दी तक बाल विवाह और बेमेल विवाह हमारे समाज की एक निकृष्ट कुप्रथा रही है। कभी-कभी तो छोटी-छोटी बच्चियों का विवाह अधेड़ उम्र के व्यक्ति से कर दिया जाता था। उम्र के अन्तर से अनेकों विकार पनप जाते थे जो कि, महिलाओं को दीन-हीन परिस्थितियों में ला खड़ा कर देते थे। यद्यपि अब यह प्रथाएँ बन्द हो चुकी हैं परन्तु बेमेल विवाह का क्रम अभी भी चल रहा है।

सिनेमा जगत-

हमारा समाज सिनेमा जगत का अनुसरण करता है और हिन्दी फिल्मों, धारावाहिकों आदि के प्रमुख स्त्री पात्रों को दीन-हीन, अन्याय सहन करने वाला, दबा-कुचला, शोषित, बताया जाता रहा है। साधारण जनता ने भी स्त्री की यही छवि बड़े ही जतन से अपने मन-मन्दिर में विराजमान कर ली है।

जो स्त्री जितना अत्याचार सहती है उसे उतना ही बड़ा महान पद प्राप्त होता है। समाज की अन्य स्त्रियों से भी अपेक्षा की जाती है कि वह भी ऐसी ही बनें। और अपने पूर्ण सामर्थ्य से स्त्री का हर प्रकार से शोषण किया। बेटियों को दुराचारियों के जाल में असहाय होकर फंसा दर्शाया गया।

जिसका किसी ने विरोध तक नहीं किया अपितु हमारे ही सभ्य पुरुष प्रधान समाज ने बढ़ा-चढ़ाकर प्रशंसा की।

बेटियों को पराया धन कहकर तो अभी तक अपमानित किया जा रहा है। एक तरफ तो कन्या भोजन के समय देवी मानकर पूजना फिर उन्हें पराये धन का प्रमाण पत्र थमा देना।

निर्णय ना ले पाना-

स्त्री वर्ग अधिकांशतः अपने किसी भी कार्य के लिए दूसरों के निर्णय की प्रतीक्षा करती है हम जब कोई गलत कार्य नहीं कर रहे तो दूसरों के निर्णय की प्रतीक्षा क्यों करें...? जीवन के निर्णय स्वयं ना ले पाना भी स्त्रियों के सशक्तिकरण में बाधा है।

गहनों और साड़ी में लिपटी मूरत-

परिस्थितियाँ अब परिवर्तित हो चुकी हैं हमारा देश बदल रहा है घर की बहू-बेटियों को हर प्रकार की स्वतंत्रता प्राप्त है फिर भी कुछ परिवारों में आज भी घर की बहू को गहनों और साड़ी में लिपटी मूरत माना जाता है जो ऐसा नहीं करता या फिर इसका विरोध करता है उसको अमर्यादित कार्य माना जाता है और उनके माता पिता को उलाहना दी जाती है कि, माँ-बाप ने अच्छे संस्कार नहीं दिये। जो कि, स्त्रियों के सर्वांगीण विकास में बहुत बड़ी बाधा है।

माना कि हमारे देश का पारम्परिक परिधान साड़ी है, और हमें गर्व है हमारी संस्कृति पर। परन्तु संस्कृतियों और परम्पराओं को जब बलपूर्वक थोपा जाता है तो वह अभिशाप

बन जाती हैं। लोगों को स्त्रियों का घर से बाहर निकल कर धन कमाना तो पसन्द है क्योंकि इससे उनका आर्थिक स्तर सुधरता है। परन्तु उनसे यह अपेक्षा रखी जाती है कि, वह साड़ी ही पहने यह समझने का प्रयास कोई नहीं करता कि उनके द्वारा थोपे गए इस आदेश से उन्हें कितनी असुविधा होती है। बात अगर परम्पराओं के उल्लंघन की है तो, कोई यह तो बताए कि, कितने पुरुष हमारे पारम्परिक परिधान धोती-कुर्ता पहन कर कार्य स्थल पर जाते हैं क्या फिर समाज की मर्यादा भंग नहीं होती......?

कौन से ग्रन्थ में लिखा है कि, मर्यादा और परम्पराओं का पालन सिर्फ महिलाओं को ही करना है पुरुषों को नहीं क्योंकि वह पुरुष हैं....

तृतीय भाग

समाधान-

ऐसी कोई विपदा नहीं है जिसका समाधान ना हो महिला सशक्तिकरण के मार्ग में माना कि, बहुत सी बाधाएँ हैं परन्तु इसके समाधान भी हैं। बाधाओं के बिना जीवन जीने का आनन्द ही नहीं। इतिहास वही रचता है जिसमें हर प्रकार की समस्याओं का सामना करने की शक्ति हो।

संघर्ष-

हाँ मुझे जीवन रूपी समर-भूमि में संघर्ष करना अच्छा लगता है क्योंकि, संघर्ष किए बिना हम सफलता का रसास्वादन नहीं कर सकते। प्रत्येक बेटी के मन में बचपन से ही यह भाव होना चाहिए कि वह अपने भाग का प्रेम, सम्मान और सफलता प्राप्त करके ही रहेगी। स्त्री ही अगर प्रत्येक स्त्री के मान सम्मान का ध्यान रखे तो दुनिया के किसी भी समुदाय में इतनी शक्ति नहीं कि वह स्त्रियों को आगे बढ़ने से रोक सके।

विरोध करना सीखें-

जब हम गलत का विरोध नहीं करेंगे चुपचाप अपनी नियति मान कर सहन कर लेंगे तो सामने वाले को कभी अपनी गलती का आभास नहीं होगा कोई भी हो उसे कोई अधिकार नहीं कि, हम पर अत्याचार करे और अत्याचारी से हमारा कोई संबंध नहीं हो सकता ऐसे संबंधों का हमें प्रतिकार करना है।

अत्याचार सहन करना सबसे बड़ा पाप है...

सबल नारी-

अब समय आ गया है कि हमें अबला का चोला उतार फेंकना है जो कि, बलपूर्वक हमें पहना दिया गया था। और हमारा दोष यही रहा कि, हमें जो दिया गया वही स्वीकार कर लिया। जब बिना स्त्रियों के घर गृहस्थी नहीं चल सकती तो यह सृष्टि क्या चलेगी हमें अपनी कमजोरियाँ सुधारते हुए अच्छाइयों को उजागर करना है जो कि, घर गृहस्थी के बोझ के तले दब गईं थी कुछ प्रतिभाएँ डूब रही थीं जिम्मेदारियों के भँवर में, उन्हें निथारना है। हम सबल हैं और जीवन में सबलता का एक नया अध्याय रचना है।

हर बेटी लक्ष्मी बाई हो

हर बेटी लक्ष्मी बाई हो तो,
क्या कर पाएगा दुराचार..
दुराचारी....?
नहीं समझता यह समाज,
बस देखना चाहता है
बेटियों की लाचारी।
सहम-सहम कर
जब जीती है बेटी,
खुद को गिद्धों की दृष्टि से
बचाते हुए।
तब सिर्फ यही कह पाते हैं लोग,
निर्भया थी पशुता की भेंट
चढ़ गई बेचारी।

स्व उन्मूलन का मुद्दा
जब तक महिलाएँ
ना उठाएँगीं
चढ़ती गईं हैं भेंट
पशुता की और आगे भी
चढ़ती जाएँगीं।
मत जाओ देश पर,
मत जाओ समाज पर,
सिर्फ हमारी बेटी ही
भारी हो हर अत्याचार पर।
हर नारी जब
बेटी में अपनी
यह संस्कार जगाएगी,
वह दिन दूर नहीं
जब हर बेटी की कर्मभूमि
झाँसी कहलाएगी।
उतार फेंकेगी
सारे गिरगिटों के नकाब
जब एक और वह
काँपेगा देश में छुपा
हर गद्दार,
वह लक्ष्मीबाई कहलाएगी।

होगी चहुँ और तरक्की
भारत माँ का
परचम लहराएगा।
जब हमारा भारत
सशक्त महिलाओं का
देश कहलाएगा।
अब ना लाना राम राज्य
सीता हरण मंजूर नहीं।
अपनों के सामने ही बेबस
चीखती वह द्रोपदी
मंजूर नहीं।
हम लड़ेंगे अपने लिए,
हर नारी में चेतना जगायेंगे।
नोंच डालेंगे वह नेत्र चुभते से,
हम लक्ष्मी बाई बन जायेंगे।

स्वयं पर गर्व करना सीखें

मुझे गर्व है कि मैं स्त्री हूँ यह सभी के स्वभाव मैं सम्मिलित होना चाहिए। स्त्री होना गर्व की बात है कि हम ही सृष्टि संचालन में प्रमुख भूमिका निर्वाहन करते हैं। हम अर्धसृष्टि हैं और यह सृष्टि हमसे ही सम्पूर्णता प्राप्त करती है। हम क्यों पशु समान जीवन व्यतीत करें! हमने क्या अपराध किया है! सबसे ज्यादा उत्तरदायित्व तो हमने ही सम्भाल रखे हैं। माना कि पुरुषों में शारीरिक बल अधिक है पर बुद्धिमत्ता और प्रत्येक कार्य में अधिक निपुण स्त्रियाँ ही होती हैं।

पहली बार एस.एल.आर प्रक्षेपण से तो तुम्हारे भी स्कंध आहत हुए थे...

सुना है तुम पुरुष हो...

इतिहास बदलना है-

प्राचीन काल से ही नारी संघर्ष करती आ रही है और बहुत ही भीषण चुनौतियों का सामना भी कर चुकी है आज उसी का परिणाम है कि बेटियों को हर प्रकार की स्वतंत्रता प्राप्त है। अब हमारे भाग में बस किंचित संघर्ष शेष रहा है। और हमें अपने मार्ग पर अडिग रहना है।

हुँकार भरेगी बनकर काली नारी जब रण में...
दुष्ट दुराचारी हो कम्पित भागेंगे क्षण में...

सुअवसर-

सुअवसर आते नहीं लाए जाते हैं जीवन का प्रत्येक क्षण एक सुअवसर है एवं उन्हीं क्षणों में से एक क्षण ऐसा होता है जिसमें इतिहास रचा जाता है।

आलोचक-

आलोचना और सफलता की बहुत ही गहरी मित्रता होती है कभी-कभी आलोचना ही हमें सफलता प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त करती है, और कभी-कभी सफलता ही हमारी आलोचकों की संख्या में वृद्धि करती है जो जितना सफल व्यक्ति होता है उसके उतने ही ज्यादा आलोचक होते हैं। आलोचना की तरंगों से आगे बढ़ने का मार्ग चुने। बिना सफलता प्राप्त किए वापिस लौटने या डूबने का विचार ना करें।

आलोचना वह शक्ति है जिसकी ऊर्जा से हम मनचाही उपलब्धियाँ अर्जित कर सकते हैं...

क्योंकि हम स्त्री हैं-

"क्योंकि हम स्त्री हैं" यही हमारी सबसे बड़ी शक्ति है। स्त्री होना अपनी कमजोरी ना समझें। बेटों की अपेक्षा बेटियाँ अधिक प्रतिभाशाली होती है उनकी ग्रहण करने की क्षमता अद्भुत होती है। कम मैं संतोष कर लेना और असुविधाओं में भी अपनी प्रतिभाएँ निखारना, प्रत्येक समस्या का सामना निडरता से करने की असीमित शक्ति होती है। हमारा यही गुण तो हमें शक्ति का पद प्रदान करता है।

हम सशक्त हैं और सक्षम होना हमारी स्वयं की जिम्मेदारी है--- जब हम सशक्तिकरण के मार्ग पर चल ही रहे हैं तो सक्षम होना भी हमारी स्वयं की जिम्मेदारी है हम स्वयं अपनी नियति लिखेंगे और हर प्रकार से सक्षम बनेंगे यह प्रण हर स्त्री को लेना चाहिए जीवन मार्ग की समस्त बाधाओं का अंत करते हुए अंततः मनचाही उपलब्धियों का स्वामित्व प्राप्त करेंगे ताकि, हमारा जीवन जीना निरर्थक ना हो। दूसरों पर आश्रित भय-युक्त जीवन जीना हमें कदापि नहीं भाता हमें सफल भय-मुक्त क्षमता से परिपूर्ण जीवन जीना है।

सारा विश्व महिला दिवस मना रहा हो और अगर एक भी महिला डरी-सहमी जीवन का औचित्य भूलकर कोने में छुपी बैठी हो तो हमारा महिला दिवस मनाना निरर्थक होगा।

हर महिला को यह भान रहे सक्षमता ही उसकी शान रहे तो हर दिन होगा महिला दिवस जब खुद पर ही अभिमान रहे..

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

सोनाली तिवारी
'दीपशिखा'

मुझे गर्व है में स्त्री हूँ

मुझे गर्व है मैं स्त्री हूँ, सृजनकर्ता भी।
सशक्त, सक्षम और आत्मनिर्भर भी।

नहीं है मुझमें जुल्म सह कर, अच्छा बनने की चाह।
मैं स्वतंत्रता से खुद चुनूंगी, अपनी हर राह।

अनुसरण करना, मुझे बिल्कुल नहीं आता।
जो है गलत, मुझे बिल्कुल नहीं भाता।

सारी कुप्रथाओं को मैं तोड़ डालूंगी।
समाज के भद्देपन को, मरोड़ डालूंगी।

फिर मेरे ही उत्कर्ष से जन्म होगा, एक नए समाज का।
हावी ना होने दूंगी अपने ऊपर, शिकंजा किसी बाज का।

अब मुझे स्त्रीत्व से शिकायत नहीं, मैं हर रुप में शक्ति हूँ।
स्वयं में अपार रुप से परिपूर्ण, मुझे गर्व है मैं स्त्री हूँ।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं संस्था – 9424765259

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला – बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क – 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/

मूल्य 50/–

978-81-951277-3-3